ब्रेख्त के रंगमंच में स्त्री की "हिम्मत..."*

डॉ.सुरभि विप्लव

सहायक प्रोफेसर
प्रदर्शनकारी कला विभाग
(फिल्म एवं नाटक)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्व विद्यालय ,वर्धा
महाराष्ट्र

समूचे विश्व के समाज और इतिहास में स्त्री के लिए जगह उसके अस्तित्व और अधिकार के संघर्षों तथा आंदोलनों का रहा है। जिसकी अभिव्यक्ति नारीवाद, स्त्री मुक्ति और सम्पूर्ण रूप से स्त्री सहित मानव मुक्ति के प्रश्नों संबंधी विभिन्न विमर्शों में हुई है। यह विमर्श बीसवीं सदी के साहित्य और रंगमंच को भी अपनी परिधि में लिया है। बर्टोल्ट ब्रेख्त का रंगमंच भी इससे अछूता नहीं रहा है, विशेष कर उनके नाटक 'खड़िया का घेरा', 'दो कौड़ी का खेल (थ्री पेनी अपेरा)' और 'हिम्मतमाई' इत्यादि। पिछले कुछ दशकों से स्त्री विमर्श के मूल स्वर पितृसत्ता, धार्मिक बंधनों का विरोध और दैहिक आजादी के इर्द –गिर्द ही घूमता रहा है,जबकि बर्टोल्ट ब्रेख्त का रंगमंच इन प्रश्नों के साथ–साथ स्त्री मुक्ति को मानव मुक्ति की समग्रता में समाहित करके देखता है।

बर्टोल्ट ब्रेख्त ने स्त्री संबंधी प्रचलित रूढ़ियों को तोड़कर अपने रंगमंच को एक नई दिशा दी है। नाट्य लेखन एवं अभिनय की रूढ़ियों को तोड़ने के लिए उन्होंने एलियनेशन पूर्ण अभिनय, गीत, संगीत का शैलीबद्ध संवाद और सबसे महत्वपूर्ण बात दर्शक को बेचैन कर देने वाली तकनीक तथा विचारों का प्रयोग किया है। 'रंगमंच' नामक पुस्तक में बलवंत गार्गी का कहना है कि- *'ब्रेख्त की प्रदर्शन पद्धति में हर दृश्य अपने आप में चित्र के समान पूर्ण होता है और बहुत छोटे–छोटे दृश्य अंशों से प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।*** सचमुच ब्रेख्त दृश्य सज्जा को लेकर बेहद जागरूक थे यही वजह है कि दृश्य सज्जा को बड़े सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत करते थे, जिससे नाटक की कथा और अभिनय को प्रभावी किया जा सके।

ब्रेख्त का नाटक 'हिम्मतमाई ('मदर करेज एंड हर चिल्ड्रेन्स')' युद्ध के खिलाफ स्त्री का, स्त्री के साथ-साथ सम्पूर्ण मानवता के लिए विद्रोह पूर्ण सशक्त अभियान है। इसकी पृष्ठभूमि को देखें तो रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट पंथों के बीच चलने वाले युद्धों ने यूरोप की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना को बदल डाला था, फिर विश्वयुद्ध। ब्रेख्त ने 1939 में हिटलर द्वारा पोलैंड पर आक्रमण के परिवेश में यह नाटक लिखा था, जोकि विश्वयुद्ध को 12 दृश्यों में समेटे हुये है। उनके इस प्रसिद्ध नाटक

* ब्रेख्त का नाटक "हिम्मतमाई (मदर करेज एंड हर चिल्ड्रेन्स)" का संक्षेप।

** ऐक्टर्स टाक अबाउट ऐक्टिंगलेविस फंक और जान ई. बूथ-, पृ-.90

'हिम्मतमाई' की स्त्री यूरोप के तीस वर्षीय युद्ध की विभीषिका में आवाजाही करती है। वही इस नाटक के केंद्र में शुरू से अंत तक जुझती है, वही इस नाटक की मुख्य नायिका है और पूरे विश्व युद्ध के विरुद्ध स्त्री के लिए जगह बनाती हुई समूची मानवता के लिए युद्ध करती दिखती है। 'माँ' में प्यार, व्यभिचारिता, कड़वाहट, जिद्द और खुदगर्जी है। वह अपने छकड़े में बैठी है, उसके दो बेटे उस छकड़े में जुते हुए हैं और उसकी गूंगी नेक बेटी मुँह का बाजा बजा रही है। माँ गीत गाती हुई युद्ध स्थल में चीजें बेचती फिरती जैसे– शराब, चमड़े की पेटियाँ, बारूद, सिक्का और चोरी की चीजें। जब उसका एक बेटा पकड़ा जाता है तो वह वेश्या के रूप में उसे छुड़ाने के लिए दलाल का काम करती है। 'हिम्मतमाई' में एक माँ के संघर्ष का मार्मिक वर्णन है कि वह किस तरह अपनी ठेला गाड़ी खींचते हुए युद्ध में व्यावसाय करते हुये लाभ कमाती है, जबकि उसके तीनों बच्चे एक-एक करके मारे जाते हैं। नाटक की शुरुआत में हिम्मतमाई युद्ध के मैदान में अपने दो बेटों और गूंगी बेटी कटरीन के साथ ठेला गाड़ी खींचते हुए दिखाई गयी है। उसका नाम अन्ना फायरलिंग से हिम्मतमाई कैसे पड़ा यह भी व्यंग्यात्मक है। वह बताती है - लोग मेरे को हिम्मतमाई बोलते हैं, क्योंकि मैं दीवालिया होने से डरती थी, इसलिए बमबारी के बीच पहाड़ी चौकी पार करके चली आई। उसके छकड़े में 50 किलो आटा जो था, फेंकती कैसे? मातृत्व की तरह उसका साहस भी गहरी संवेदना को दर्शाता है। लड़ाई पर पलने वाले लोगों से कीमत वसूलती है। हवलदार हिम्मतमाई के बेटों को फौज में भरती करने के लिए कहता है-'मीठा मीठा हप्प, कड़वा कड़वा थू। तेरे ये सांड़ जंग की कमाई पर मुटाते रहें, पर जंग तुझसे बदले में कुछ न मांगे, अपनी देखभाल आप करे, और नाम है हिम्मत माई? उस जंग से डरती हो जो तुम्हारी रोजी चलाती है !' यहाँ पर स्त्री जंग को ललकरती है। जंग के समय बड़ी-बड़ी बातें खोखली लगती हैं। सिपाहियों के बहादुर होने की बात पर हिम्मतमाई कहती है - जब चारों तरफ बड़े-बड़े गुण दिखाई देने लगें तो समझ लो जरूर दाल में काला है। हिम्मतमाई के माध्यम से ब्रेख्त ने आम आदमी पर युद्ध के प्रभाव को दिखाया है जो चाहकर भी युद्ध में नफा नहीं कमा पाता और हमेशा घाटे में रहता है। हार हो या जीत, हम मामूली लोगों के लिए चक्की का पाट है, जिसमें निरंतर पिस्ते रहते हैं।

युद्ध में सभी नैतिक मूल्यों का ह्रास हो जाता है। रसोइया कहता है- एक तरह से यह आम लड़ाइयों जैसी है। इसमें घूसखोरी, खून खराबा, मारकाट तो चल ही रही है, कभी-कभार औरतों की इज्जत लूटना भी शामिल है.' भारत में चल रहे भ्रष्टाचार और घूस विरोधी आन्दोलन के मद्देनजर यह टिप्पणी और भी सामयिक लगती है- 'घूसखोरी भी भगवान की मेहरबानी की तरह है, उसी का असर है हम गरीब लोगों को जब तक घूस चालू है सजा में छूट मिलती रहेगी और बेकसूर आदमी भी बचने का मौका पा सकेगा.' फौजियों की लम्पटता पर भी करारा व्यंग्य किया गया है - 'फौजी को साफ सुथरा चेहरा दिखा नहीं कि एक रंडी और बढ़ गयी दुनिया में। हफ़्तों कुछ खाने को मिलता नहीं इनको, फिर जैसे ही लूटपाट करके पेट भरा कि हर लहंगे पर टूट पड़ते हैं, विधवा जवान कुछ नहीं देखते।' युद्ध पर पलने वाली शांति को आपदा की तरह देखते हैं। हिम्मतमाई कहती है - 'कम से कम लड़ाई अपने साथ देने वालों का पेट तो भरती है,' अपनी जान बचाने के लिए हिम्मतमाई को शत्रु सैनिक से झूठ बोलना पड़ता है और अपने बेटे को पहचानने से इनकार कर देती है जिसे मरने के बाद गढ्ढे में फेंक दिया जाता है।

गरीबों के लिए साहस क्या है? इस पर भी ब्रेख्त ने इस स्त्री पात्र 'हिम्मतमाई' के मुंह से बहुत ही मार्मिक, तार्किक और स्वाभाविक बातें कहलवाई हैं - 'गरीबों के लिए सुबह आँख खोलना भी हिम्मत की बात है या खेत जोतना और वह भी जब लड़ाई चल रही हो। एक दूसरे को काटते हैं, फांसी पर चढ़ाते हैं, इसलिए एक दूसरे से आँख मिलाने के लिए भी उन्हें हिम्मत की जरूरत पड़ती है। राजा महाराजा और पंडे पुजारी को बर्दाश्त करने के लिए भी तो भारी हिम्मत चाहिए क्योंकि यही लोग तो उनका खून चूसते हैं। बाकी धंधों की तुलना में धर्म का कारोबार हर हालत में फलता-फूलता रहता है। रसोइया कहता है - 'रसोइये को कोई नहीं पूछता क्योंकि खाने को कुछ नहीं। पर धर्म तो पहले की तरह चालू है, सदाबहार धंधा है' । यहाँ भारत में धर्म के नाम पर चलने वाले धंधे,राजनीति और बाबाओं की बर्बरता को समझा जा सकता है। हिम्मतमाई नाटक के अंत में गूंगी कटरीन गांव वालों को सैनिकों से आगाह करने के लिए नगाड़ा बजाती है। सैनिक उसे गोली मार देता है। हिम्मतमाई कहती है - 'रात में मैंने एक सपना देखा, मैं गाड़ी पर बैठकर नरक पार कर रही हूँ...गोला- बारूद बेचती सुरंग से गुजर रही हूँ। भूखे लोगों के लिए मिठाई के डिब्बे लेकर, दोनों बेटों की मौत और गूंगी का बलात्कार कर दिए जाने के बाद हिम्मतमाई युद्ध को कोसती है - 'बर्बाद तो पहले ही हो चुकी है बेचारी रहा सोहन, उसका मुंह मैं कभी नहीं देख पाऊँगी और अर्जुन कहाँ है, यह ऊपर वाला ही जानता है।

ब्रेख्त ने हिटलर की अमानवीय फासीवादी व्यवस्था को करीब से देखा और समझा था। इसीलिए 'हिम्मतमाई' में दर्शकों को अंत में मुख्य स्त्री पात्र के अभिनय,संवाद,संगीत सहित समूचे रंगविधान से बेचैन कर देने वाला प्रभाव मिलता है। उसके पात्र कठोर हैं तांबे के कलश की तरह , जो जीवन की विसंगतियों को उभारने की कोशिशें करते हैं। तथा उनके प्रति दर्शक को बेचैन और विषादकाल के नए मनोविज्ञान में प्रवेश कराते हैं। इस नाटक में ब्रेख्त सम्पूर्ण मानवता की मुक्ति के राह में स्त्री के संघर्ष के महत्व को भी सर्जनात्मकता और संवेदना के साथ अभिव्यक्त करते हैं और यह साबित करते हैं कि स्त्री के साहस और समझ के बगैर कोई भी विद्रोह अधूरा है। ब्रेख्त के रंगमंच की स्त्री पितृसत्ता के जंजाल में कराहती मात्र स्त्री नहीं बल्कि उसकी समग्रता में पूंजीवादी राजसत्ता के मानवता विरोधी बारीक तंतुओं को उद्घाटित करती, श्रमिक (पुरुष) के साथ कंधा से कंधा मिलाकर जूझने वाली राजनीतिक स्त्री है। मैं यहाँ राजनीतिक इसलिए कह रही हूँ कि ब्रेख्त के रंगमंच का मूल स्वर अपनी समस्त लोकरंगीय साज-सज्जा के साथ मर्म के स्तर पर राजनीतिक है। 'हिम्मतमाई' की स्त्री विश्वयुद्ध के भयावह मुहाने पर खड़ी होकर युद्ध के राजनीतिक अर्थशास्त्र का आख्यान भी बाँचती है। यह एक नयी स्त्री है जो पारंपरिक नारीवाद की सीमाओं को तोड़ती है।

आज भूमंडलीकरण के दौर में विश्व एवं भारत की स्त्री पर होने वाले शोषण,उत्पीड़न में क्रमिक रूप से बृद्धि हुई है और इसके खिलाफ स्त्री का नारीवादी संघर्ष भी मुखर हुआ है। इस भयावह स्थिति के खिलाफ नारीवाद की पारंपरिक अवधारणायें भी अपर्याप्त साबित हो रही है । स्त्री को सजने-सँवरने की बाजारवादी वस्तु के रूप में तब्दील कर उसे मात्र पितृसत्ता के खिलाफ विद्रोह तक ही सीमित किया जा रहा है, ऐसे में ब्रेख्त के 'हिम्मतमाई' की रेडिकल स्त्री अपने अस्तित्व के साथ-साथ समस्त मानव मुक्ति के परिप्रेक्ष्य में उपस्थित है ।